रात्रि सभा 5-8-68 ओमशान्ति 'खास बुलेटीन'' शिव बाबा याद है?

बम्बई में प्रदर्शनी कर रहे हैं। भारत विद्या भवन में। स्पीकर अच्छी लेडीज़ गुजराती है। वास्तव मे यह एक दुःख तो नहीं हैं। दुःख तो अनेक हैं। यह चाहते हैं विश्व में शांति हो तो सभीदुःख दूर हो जाते हैं। आदीसनातन देवी देवता धर्म में कोई दुःख न था। वह था ही सुख शान्ति। अभी वही विश्व मे शान्ति स्थापन हो रही हैं। भगवानुवाच में सुख शान्ति का सागर हूं प्रेम का सागर हूं, सम्पत्ति का सागर हूं। जब कि मैं हूं सुखधाम स्थापन करने वाला। इसमें सुख शान्ति पवित्रता सभी हैं। इस कलियुग का नाम ही है दुखधाम। यहां तो अनेक प्रकार के दुःख आद हैं। उनका कारण है अपवित्रता। भारत इस समय वेश्यालय है। विश्व में शान्ति थी तो शिवालय कहा जाता था। उसमें कोई दुःख नहीं। बाप खुद कहते हैं काम महाशत्रु है। इस पर जीत पाने से जगत जीत बनेंगे। जबत जीत यह देवताएं हैं। तो मनुष्य से देवताबनाने वाला बाप ही है। ऐसे ब्रह्माकुमारियां बैठ समझावे। वहां कुमारका बैठ ऐसी2 बातें सुनावे। उनको पता ही नहीं है सुख धाम था। अभी है दुःखधाम, इनके बाद फिर सुखधाम होना है। जिसकी स्थापना बाप ही करते हैं। जिनका नाम है शिव। बेहद के बाप ही यह बेह के सुख का वरसा देते हैं। सभी दुःख दूर हो जाते हैं। वहां कोई अप्राप्त बस्तु नहीं जिनकी प्राप्ती के लिए पुरुषार्थ किया जाये। यह जो गीता है उनको सिर्फ मालूम पड़े गीता में बहुत ग्लानी है। जिस कारण भारत पापात्मा भ्रष्टाचारी बन गया है। नाम ही है दुःखधाम। सुखधाम सतयुग को कहा जाता हैं। वहां कोई दुःख नहीं। सभीदुःख दूर हो जाते हैं। उसको ही विश्व में शान्ति कहा जाता। एक ही देवीदेवता धर्म था। और धर्म न थे। अभी आदी सनातन धर्म विश्व में शान्ति का है नहीं। जानते ही नहीं हैं विश्व में शांति कब थी। शास्त्रों में तो कल्प की आयु हीबड़ी लगा दी है। गीता को खण्डन कर दिया है। गीता भगवान ने बनाई नहीं परन्तु सुनाई है। खुद तो नालेजफुल है। कृष्ण को नालेज फुल नहीं कहा जाता। वह तो ऊंच ते ऊंचभगवान ही कहा जाता। देवताओं को भी नहीं। ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी नहीं। ऊंच ते ऊंच है परम पिता परमात्मा शिव। वही रात्रि को आकर दिन बनाते हैं। ऐसे बैठ समझावे। विश्व में शान्ति की स्थापना हो रही हैं। अशान्ति दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। नेचरल कैलेमिटीज़ आदसामने खड़ी है। यह पाठशाला है जिसमें बाप बैठ शिक्षा देते हैं। बाप है ही लौकिक और पारलौकिक। और फिर प्रजापिता ब्रह्मा भी बाबा है। बाप कहते हैं मैं इन द्वारा विश्व में शान्ति स्थापन कररहा हूं। अभी काम पर जीत पहनों तो जगत जीत बनेंगे। आदी सनातन देवी देवता धर्म था तो और धर्म नहीं थे। अभी और सभी धर्महैं वह धर्म नहीं है। अभी यह अनेक धर्म खलास हो जानी है। विनाश होगा फिर यह हास्पीटल आद नहीं होंगे। जैसे तुम सेकण्ड में जीवन मुक्ति पाते हो। पुरानी दुनिया का विनाश भी सेकण्ड में हो जानीहै। यहां तो रक्त की नदियां बहनी है। फिर दूध की नदियांबहेंगी। यह गायन है। यह भी तुम जानते हो। तुम हो पुरुषोत्तम संगम युगी ब्राहमण। बाकी सभी हैं रावण के भ्रष्टाचारी सम्प्रदाय। भगवान किसको कहा जाता है यह भी भारतवासी समझते ही नहीं। बाप ही एक आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। कहते हैं काम महाशत्रु है। अनेक प्रकार के दुःख हैं। बाप कहते हैं जब2 धर्म की ग्लानी होती है, मेरे लिए ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं। कच्छ अवतार मच्छ अवतार कह देते। मूल बात है विश्व में शान्ति। यहां यह दुःखधाम है। भारत सुखधाम था जब कि सतयुग था। अभी कलियुग में अनेकानेक राजाएं अनेक धर्म हैं। बाप कहते हैं अभी पुरानी दुनिया का विनाश होना है। बाप आकर 5000 वर्ष आकर विश्व में शान्तिस्थापन करते हैं। बाकी जो भी विश्व में शान्ति के लिए कोशिश करते हैं वह सभी फाल्तू हैं।

बाप कहते हैं अभी काम पर जीत पाने पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करो। प्रतिज्ञा की थी तब ही पवित्र सुखधाम की स्थापना हुई थी। अभी पवित्र जो बनेंगे वही पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। यह तो और दुखधाम हो जाता है। इस समय है रावण राज्य। रामराज्य आदी सनातन देवी देवता धर्म [illegible]

सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी पास हुये फिर द्वापर बाद अनेक धर्म स्थापन हुये हैं। अभी 5000 वर्ष पूरी होनी है। पैराडाईज स्थापन होना ही है। यह है विकारी दुनिया। अथाह दुःख है। निर्धनके नास्तिक हैं। न रचयिता को न रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। बाप ही आकर बताते हैं। आदी सनातन एक ही देवी देवता धर्म था। अभी वह प्रायः लोप है। बड़ का झाड़ है ना। फाउन्डेशन है नहीं। यह देवी देवता धर्म का भी फाउन्डेशन है नहीं। सुखधाम की स्थापना अनेक धर्मों का विनाश होना ही है। योगबल से ही स्थापन हो रहा है। इनको ही भारत का प्राचीन योगबल कहा जाता है। इसमें बाहुबल की दरकार ही नहीं। सन्यासियों का निवृति मार्ग ही अलग है। बाप समझाते हैं पवित्र गृहस्थ आश्रम था। अभी है अपवित्र। ऐसे2 अच्छी रीत समझाना है। पुरुषार्थ करते रूहानी म्युजियम खुलते रहेंगे। कल्प2 तुम ऐसे ही करते रहे हो। हम सो शुद्र थे फिर हम सो ब्राह्मण देवता क्षत्री वैश्य शुद्र बनते हैं। विराट रूप दिखलाओ। जो कुछ भी नहीं जानते तुच्छ बुधि हैं। मूल बात है पवित्रता को। कामपर जीत पानी है। कहना चाहिए हम ब्रह्मा कुमारियां श्रीमत पर गाडली मिशनरी हैं। ऐसे2 जहां-तहां समझावे। तुम दिखाते भी हो श्रीकृष्ण आ रहा है। जिसको ही स्वर्ग अथवा विश्व में शान्ति कहा जाता है। त्योहार भी सभी पुरुषोत्तम संगम युग के ही हैं। ऐसे2 अच्छी रीतसमझावे विचार सागर मथन कर। विनाश के बाद ही सुखधाम। ब्राह्मण बिगर देवता बनेंगे नहीं। इस समय है शुद्र आसुरी सम्प्रदाय। पहले है सूर्यवंशी फिर है चन्द्रवंशी। यह है योग बल की युध। योगबल से ही भारत में आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना किया था। अभी भारतवासी कलियुगी नींद में हैं। शास्त्रों में लिख दिया है कलियुग इतने वर्ष का है। यहां नई दुनिया की स्थापना हो रही है। तो अभी तुमको जगाना है। निश्चय बुधि विजयन्ति। शिव बाबा हमको पढ़ा रहे है। वही विश्व का स्वराज्य देते हैं। फिर बाप चले जाते हैं। तुम बच्चों को अपना राज्य भाग्य दे खुद वानप्रस्त में रहते हैं। बाप कहते हैं मैं इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में आता हूं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। रात्रि सभाः-4-8-68ः-तुम हो ईश्वरीय सन्तान। पाण्डव। यात्रा करते हैं ना। आत्मा को यात्रा करनी है इसलिए पाण्डव सेना नाम पड़ा है। xxx पण्डे बन यात्रु को भी ले आते हैं। पाण्डव सेना का नाम अपना है। इन्हों ने पाण्डव कौरव दोनो को राजाई दिखाई है। रानी नहीं दिखाई दोनो की। पाण्डवों की द्रौपदी दिखाई है परन्तु हिसाब ठीक नहीं रहता। भक्ति मार्ग के शास्त्र तो पढ़े हुये हैं उनकी बुधि में आत्मा सो परमात्मवैठा हुआ है। वह भूसा निकले तब जब तकदीर जगनी हो। भल ज्ञान सुने परन्तु जब तक बैहद के बाप पर निश्चय नहीं है तब तक देवी पद पा न सके। कुछ न कुछ याद करे तो आ सकेंगे। जो बाप को जानते ही नहीं सर्वव्यापी का ज्ञान बुधि में है। बाप को गली देते उनको वरस मिल कैसे सकता। खड़ी बन्धन पर समझाना है। परम्परा से कब से बांधी है। यह है पवित्रता की निशानी। परमपिता परमात्मा ही आकर पावन दुनिया बनाते हैं। तुम समझावेंगे तो समझेंगे यह जानते हैं तब बताते हैं। आगे भी बाप ने इस समय आकर पवित्रता की प्रतिज्ञा ली थी। समझाना होता है। पवित्र बनने से पवित्र दुनिया का मालिक बनते हो। यह श्रीकृष्ण पहला नम्बर है स्वर्ग का प्रिन्स। इनके धाम आ सकते हैं। उनको ही विष्णु पुरी कहा जाता है। सूर्यवंशी को ही यहां आना है। और आ नसके। ज्ञान भी उठा न सकेंगे। हम सो का अर्थ भी यह नहीं है आत्मा सो परमात्मा। भल समझाया परन्तु बुधि में बैठा नहीं। एक कानसे सुना औरदूसरे कान से निकाल दिया। समझाना है यहां मनुष्यमत की दरकार नहीं। ब्राह्मण को मत ही काम आवेंगे। तुम इस श्रीमत को जानते हो नहीं तो श्रेष्ठ बन कैसे सकेंगे। देवीगुण धारण करनी है। भगवान सिगरेट पीते हैं। देवतायें हीनहीं पीते तो भगवान कैसे पीयेंगे। परमात्मा सर्वव्यापी उनकी यहकर्तव्य है? मास मदिरा आदि खाना। तुम कहां भी भाषण आदि करते हो कितने आते हैं। पूछना है देवी गुण है। सिगरेट मास मदिरा खाना आसुरी गुण है। तो बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। धारणा हो जो ऊंच पद पासके। बच्चों की अवस्था बड़ी हो मिठ= मीठी चाहिए। अन्दर बाहर साफ। दिल साफ तो मुराद हासिल। झूठ बोलना बेकायदे है। झूठ बोलने से दन्ड पड़ जाता है। अज्ञान काल में इतना नहीं पड़ता जितना यहां पड़ता है। झूठ न बोलना है। ओम।